रिकॉर्डः– ना वो हमसे जुदा होंगे..... ओम प्रातः क्लास 15/7/1966
ओम् शान्ति। मीठे–2 बच्चों ने गीत सुना। गीत तो आशुक–माशुक के (ऊ)पर ही गाया है। बाप समझाते हैं बरोबर तुम आधा कल्प के आशुक हो। अभी तुम(को) स्मृति आई है। बरोबर आधा कल्प बाप को याद किया है, जबसे रावण राज्य शुरू हुआ है। ऐसे भी नहीं कि कोई पूरा आधा कल्प याद किया है। नहीं। जब–2 दुख जास्ती आया है तब जास्ती याद किया है। अब तुमको पता पड़ा है कि भक्तिमार्ग से हम उतरते आए हैं। ड्रामा का राज़ बुद्धि में है। मुख से कुछ कहने का नहीं है। हम उनके हो गए। बस। इसलिए जास्ती ज्ञान की दरकार नहीं। बाप के बने तो बाप की जायदाद के भी मालिक हो गए। कुछ कर्म–इन्द्रियों से करने का नहीं है। भक्तिमार्ग में भगवान से मिलने लिए कितने यज्ञ–तप, दान–पुण्य, भक्ति करते हैं। जहाँ भी जाओ तीर्थ मंदिर आदि अथाह हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो सारे भारत का अथवा मंदिर घूम सके। अगर घूमे तो भी कुछ मिलता नहीं। पिंड घड़ियाल आदि कितना घमसान है। यहाँ तो घमसान की कोई बात नहीं। ना गीत गाने की, ना तालियाँ बजाने की बात है। मनुष्य तो क्या–2 ना करते हैं। अथाह कर्मकांड है। यहाँ तुम बच्चों को सिर्फ याद करना है। और कुछ भी नहीं। घर में रहते सब कुछ करते हुए सिर्फ याद करना है बाप को। तुम जानते हो हम अभी देवता बने हैं। (य)हाँ ही दैवीगुण धारण करने हैं। खान–पान भी शुद्ध होना चाहिए। 36 प्रकार के भोजन तो वहाँ मिलेंगे। यहाँ साधारण रहना है। ना बहुत ऊँच, ना बहुत कम। सब बात में सहनशीलता चाहिए। (स्तुति, जय–पराजय), सर्दी–गरमी यह सब कुछ सहन करना पड़ता है, समय ही ऐसा है। पानी ना मिलेगा, यह ना मिलेगा। सूर्य भी अपनी तपत दिखावेगा। हर चीज़ तमोप्रधान बनती है। यह सृष्टि ही तमोप्रधान है। तत्व भी तमोप्रधान है। तो यह दुख देते रहेंगे। स्तुति–निंदा में भी बहुत झट गिर पड़ते हैं। किसने उल्टा–सुल्टा कुछ किसको सुनाया; क्योंकि आजकल (बातों) की बनावट तो बहुत है ना। कोई ने कुछ कहा तुम्हारे लिए बाबा यह कहते हैं कि इनको देह–अभिमान है, यह है, बाहर का शो बहुत है। किसने सुनाया, बस, बुखार चढ़ जाएगा। नींद भी फिट जावेगी। आजकल के मनुष्य ऐसे हैं कोई को झट बुखार चढ़ा दे। किसको कहेंगे तुम तो पीली हो गई हो। इतनी गल गई हो। बस, और ही पीली हो जावेगी। तो बाप कहते हैं कोई भी ऐसी वाह्यात बातें मत सुनो। बाप कब भी किसकी निंदा नहीं करते हैं। बाप तो समझाने लिए ही कहते हैं। उल्टी–सुल्टी बातें एक/दो को सुनाने से अच्छे–2 बच्चे भी गिर पड़ते हैं। ट्रेटर बन वाह्यात बातें एक/दो को जाकर सुनावेंगे। ऐसी झूठी बातें बनाना सीखना हो तो व्यास भगवान से सीखो। क्या–2 शास्त्रों में बैठ लिखा है। कितने झूठ बोले हैं। जब माया का राज्य शुरू हुआ है तो ऐसे शास्त्र बैठ बनाए है, जिससे (फा)यदा कुछ भी नहीं। कितनी कहानियाँ बनाई हैं! अब तुम बच्चे समझते हो, सब झूठ है, सच की रत्ती नहीं। मनुष्य तो जो सुनते सत–2 करते रहते और बहुत खुश होते हैं। कृष्ण के ऊपर भी कितने कलंक लगाए हैं। भक्तिमार्ग में जो कुछ है सब असत्य–मिथ्या। अब तुमको ज्ञान मिला है तो तुम कब हाय राम अथवा हे भगवान नहीं कह सकते हो। यह अक्षर भी भक्तिमार्ग के हैं। तुम्हारे मुख से कोई भी भक्तिमार्ग के अक्षर नहीं निकलने चाहिए। बाप सिर्फ कहते हैं– मीठे लाडले बच्चों, आत्म–अभिमानी बनो। कितना प्यार से (स)मझाते हैं। किसकी भी बात ना सुनो। फालतू परचिन्तन ना करो। एक बाप से ही सुनो। एक बात पक्की कर लो। हम आत्मा हैं। आत्मा अविनाशी है, (शरीर) विनाशी है। आत्मा ही संस्कार धारण करती है। अब तुमको आत्म–अभिमानी बनना है। द्वापर में रावण राज्य में तुम देह–अभिमानी बनते हो; इसलिए अब देही–अभिमानी बन(ने) में मेहनत लगती है। घड़ी–2 बुद्धि में यह आना चाहिए हमको बेहद का बाप मिला है। कल्प–2 बाप वर्सा देते हैं। अब उनकी मत पर चलना है। उनके लिए ही गायन है तुम मात–पिता... वो सब संबंधों का सुख देने वाला है। उनमें सब मि.... है। बाकी और सब संबंधी दुख देने वाले हैं। एक ही यह बाप है तो(जो) सब सुख देने वाला है। रास्ता बिल्कुल ही सहज बताते हैं कि अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। बाप समझाते

है, वह कोई नई बात नहीं है। तुम जानते हो हर 5000 वर्ष बाद हम ऐसे बाप के पास आते हैं। यह कोई साधु–संत नहीं। तुम अभी कोई भी साधु–संत आदि पास नहीं जाते। बाकी हाँ बाप कहते हैं प्रवृत्तिमार्ग के संबंधियों से तोड़ नि(भाना) है। नहीं तो और ही खिटपिट हो जाती है। युक्ति से चलो। प्यार से हरेक को समझाना है कि देखो अब विनाश का समय नज़दीक है। आसुरी दुनिया खतम होनी है। अब देवता बनना है। दैवीगुण यहाँ धारण करने हैं। प्यार से समझाना चाहिए। देवताएँ प्याज़ धूम बसर आदि तो खाते नहीं। हम भी मनुष्य से देवता बनते हैं तो हम (यह) कैसे खा सकते! तुमको भी राय देते हैं यह छोड़ो। ऐसी चीज़ें हम खाते नहीं। अब हमको बेहद का बाप दैवीगुण सिखाने वाला मिला है। तो सर्वगुण सम्पन्न... यहाँ बनना हैं। यहाँ (ब)नेंगे तब फिर भविष्य नई दुनिया में आवेंगे। यह ऐसे ही होता है जैसे रात पूरी हो दिन होता है। अब रात में ही दैवीगुण धारण करने हैं तो फिर सुबह हो जावेगा। अपनी परीक्षा हरेक को अपनी ही लेनी है। ऐसे नहीं कि बाप तो सब कुछ जानते हैं। तुम अपन को देखो ना। स्टूडेंट्स ऐसे नहीं कहेंगे कि टीचर तो सब कुछ जानता है। इम्तिहान के दिन नज़दीक आते हैं तो बच्चे (खुद) भी समझते हैं हम कितना पास होंगे। किस सब्जेक्ट में (हम) ढीले हैं। मार्क्स कम लेंगे। फिर सब मिला कर पास तो हो जावेंगे। यह समझते हैं। तो इसमें भी अपनी जाँच रखनी है– हमारे में क्या कमी है। मैं बहुत मीठा बना हूँ। सबको प्यार से समझाना है। हम आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा है। मनुष्य की बात नहीं। हम निराकार को भगवान कहते हैं। भगवान रचता एक ही है। बाकी सब है रचना। साधु–संत आदि सब रचना है। रचना से किसको वर्सा नहीं मिल (स)कता। कायदा नहीं है। अब सर्व रचना का सद्गति दाता एक ही रचता बाप है। उस(में) साधु–संत आदि .... हैं तो सब आत्माएँ ना। यह तो समझते हो, मनुष्य अच्छे–बुरे होते ही हैं। पोज़ीशन ऊँचा–नीचा होता है। सब सन्यासियों में भी नम्बरवार हैं। कोई तो देखो भीख माँगते रहते हैं। कोई को सब पाँव पड़ते रहते हैं। तुम बच्चों को भी ऊँच बनना है। बहुत मीठा बनो। कब भी क्रोध से बात नहीं करनी चाहिए जितना हो सके। कहते हैं, बच्चे बहुत तंग करते हैं। सो तो आजकल के बच्चे बिच्छू–टिंडन मिसल ही हैं। प्यार से उनको समझाओ। दिखाते हैं कृष्ण चंचलता करता था तो उनको रस्सी से बांधते थे। जितना हो सके प्यार से समझाना है या तो हल्की सज़ा। बिचारे अबोध हैं। समय भी ऐसा है। सब नाग–बलाएँ, बिच्छू–टिंडन मिसल हैं। सन्यासी स्त्री के लिए कहते हैं सपर्णी है। खुद भी सर्प हैं ना। खुद विकार को सन्यास करते हैं। दोनों ऐसे बने, ऐसा पुरुषार्थ करना चाहिए ना; परन्तु स्त्रियाँ जंगल में जा ना सके। तुमको तो कहा जाता है बाहर (क)हाँ भी भटकना नहीं है। अच्छे मनुष्य (जो) होते हैं वो कहते हैं तुम बाहर क्यों भटकती हो? भगवान (की) बंदगी घर में बैठकर करो। शिव का चित्र तुमको दे देते हैं। तुम बाहर क्यों जाती हो? बाहर का संगदोष बहुत खराब है। कहते तो राइट हैं। चित्र तुमको दे देते हैं। जितनी पूजा करनी हो बैठ करो। कोई ठिक्कर–भित्तर का बना देते हैं। कोई साहुकार होते हैं तो चाँदी का बना देते हैं। बहुत साहुकार होगा तो सोने का भी बना देगा। साहुकार लोग ऐसे सोने के चित्र बनाय भी घर में रखते हैं। अभी बेहद का बाप कहते हैं मूर्ति आदि रखने की कोई दरकार नहीं। कुछ भी मेहनत करने की दरकार नहीं। शिव का चित्र भी क्यों रखते हो? वो तो तुम्हारी आत्मा का बाप है ना। बच्चे घर में बाप का चित्र क्यों रखेंगे। बाप तो हाज़रा हजूर है ना। बाप कहते हैं मैं भी हाज़रा हजूर हूँ। फिर चित्रों की तो दरकार नहीं। मैं बच्चों को समझाता हूँ। कहते हैं बापदादा को (देखें)। अब बाप तो है निराकार। उनको देख ना सके। बुद्धि से समझ सकते हैं। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर तुमको नॉलेज बैठ देता हूँ। नहीं तो कैसे आऊँ? सन्यासियों में भी नहीं आ सकता हूँ। मैं आता ही उनमें हूँ जो पहले नम्बर में था। वो ही अब लास्ट नम्बर में है। तुमको भी अभी पढ़कर फिर पहले नम्बर में जाना है। पढ़ाने वाला तो एक ही है, जिसको ज्ञान का सागर, पतित–पावन कहा जाता है। तुमको (ज्ञान) बहुत अच्छा

मिलता है। तुम जानते हो शान्तिधाम तो हमारा घर है। सुखधाम हमारी राजधानी है। दुखधाम रावण की बादशाही है। अब बाप कहते हैं– मीठे बच्चे, अपने शांतिधाम घर को याद करो। सुखधाम को याद करो। दुखधाम के बंधन भूलते जाओ। और कोई ऐसे कह ना सके, ना वो जा सकते हैं। ड्रामा के बीच से वापिस कोई भी जा नहीं सकता। कोई को जाना ही नहीं है। यह जो कहते हैं फलाना (ज्योति) ज्योत समा(या) वा पार निर्वाण गया। एक भी जाता नहीं। सबका बाप अथवा मालिक परमात्मा ही है। सभी आशिकों का एक माशुक। वो जिस्मानी आशुक–माशुक एक/दो को याद करते हैं। बुद्धि में चित्र आ जाता है, फिर एक/दो को याद करते रहेंगे। खाना खाते रहेंगे, याद करते रहेंगे। वो तो है एक जन्म के आशुक–माशुक। तुम तो जन्म–जन्मांतर के आशुक हो एक माशुक के। तुमको और कुछ भी नहीं करना है। सिर्फ एक को याद करना है। सिर्फ एक बाप को याद करना है। आशुक–माशुक का चित्र सामने आ जाता है, बस, उनको देखते–2 काम ठहर जाता, फिर गुम हो जाता और काम करने लग पड़ते। इसमें तो ऐसे नहीं है। आत्मा भी बिन्दी, परमात्मा भी बिन्दी। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इसमें ही मेहनत है। कोई भी ऐसी प्रैक्टिस करते नहीं हैं। बच्चे समझते हैं आत्मा तो ठीक है। भृकुटि के बीच में रहती है। आत्म का ज्ञान मिला अर्थात् आत्मा को रियलाइज़ किया। बाकी रहा परमात्मा। वो भी तुम अभी जानते हो। बाबा (आ)कर यहाँ बैठे हैं (भृकुटि के बीच) इनकी जगह भी यहाँ है। आत्मा कहाँ भी चली जाती है, निकल जाती है, मालूम थोड़े ही पड़ता है। उनका मुख्य स्थान भृकुटि है। बाप कहते हैं मैं भी बिन्दी हूँ। तुमको पता भी पड़ता नहीं जो मैं इसमें आकर बैठा हूँ। बाप तो बच्चों को सुनाते हैं। तुमको जो सुनाते हैं हम भी सुनते हैं। समझानी तो बिल्कुल राइट है। मनुष्यों के तो कितने गपोड़े हैं। दैवी धर्म वाले जो होंगे वो झट समझेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है। स्थापना भी और फिर विनाश भी होगा। और धर्म स्थापक ऐसे नहीं करते। वो सिर्फ अपना धर्म स्थापन करते हैं, जो फिर वृद्धि को पाते हैं। यहाँ तो जितना जो पुरुषार्थ करते उतना भविष्य में ऊँच पद पाते हैं। तुम भविष्य में 21 जन्मों लिए प्रालब्ध पाते हो तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए और है भी बहुत सहज। योग भी सहज है, जिससे तुम्हारे विकर्म विनाश होते हैं। बाप कहते हैं मैं गारंटी करता हूँ कल्प–2 हम ही आए तुम पतितों को पावन बनाता हूँ। वहाँ पतित एक भी होता नहीं। ज्ञान भी कितना सहज है। 84 जन्मों का चक्कर कैसे लगाते हैं वो भी बुद्धि में नॉलेज है। हमने ही 84 जन्मों का चक्कर लगाया है यह निश्चय रखना है। निश्चय में ही विजय है। ऐसे नहीं, हम 84 जन्म लेते हैं वा कुछ कम। जबकि तुम ब्राह्मण हो, तुमको निश्चय होना चाहिए बरोबर हमने 84 का चक्कर पूरा भोगना है। यह बहुत सहज समझानी है। बाप ही आए 84 जन्मों के चक्कर का राज़ समझाते हैं। यह भी बच्चों को समझाया है यह सब चित्र दिव्य दृष्टि से बाप ने बनवाय हैं। करैक्ट भी करवाए हैं। शुरू में (जब) बनारस में बाबा एकांत में रहते थे तो ऐसा चक्कर दिवारों पर बैठ निकालते थे। जैसे ध्यान में जिसको जो आता वो करते हैं ना। वैसे हम भी उनकी सारी दिवार खराब कर देता था। समझता कुछ नहीं था कि यह क्या है। चक्कर बनाता रहता था। खुशी भी बहुत होती थी। सा० होने से जैसे उड़ जाते थे। यह क्या होता है, कुछ समझ में नहीं आता था। तुम जानते हो आगे चित्र और किसम के बनाते थे। जो चित्र पहले बनाते थे वो फिर बदल कर नए बनाते गए हैं। अब भी नए–2 चित्र बन रहे हैं। कल्प पहले मुआफिक बनते जाते हैं। तो बच्चे अच्छी रीति समझ जाए। सीढ़ी का चित्र देखो कैसा अच्छा है। इस पर समझाना सहज होता है। दिन–प्रतिदिन सहज होता जाता है। देर से आने वालों को और ही सहज समझानी मिलती है। तुमको 20–25 वर्ष लगे हैं। अब नए–2 जो आते हैं 7 दिन में सारा नॉलेज समझ जाते हैं। पुरानों से भी आगे जा रहे हैं। कोई कहते हैं पहले आते थे तो अच्छा था। अरे, यह भी फिकर मत करो। आगे आते थे और भाग जाते थे तो? देरी से आने वालों को सहज तंत मिलता है। पहले वालों ने जो देखा वो अब है नहीं। खतम हो गए। पिछाड़ी को रिज़ल्ट का मालूम पड़ता है। कौन

पास हुआ। नए–2 पढ़ते हैं और सर्विस पर लग पड़ते हैं। पुराने इतने नहीं लगते। नई–2 बच्चियाँ सर्विस से दिल पर चढ़ी रहती हैं। पुरानी दिल से उतरी रहती हैं। कितने तो खतम भी हो गए। इसलिए बाबा कहते हैं महान ते महान मूर्ख देखना हो तो यहाँ मधुबन (में) देखो। जिनको सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल भूषण कहा जाता है उनमें ही आश्चर्य(वत्) सुनन्ति... हो जाते हैं। बाप को फारकती दे देते हैं। सजनियाँ साजन को डायवोर्स दे देती हैं। बच्चे बहुत बाप को फारकती दे देते हैं। गाया भी हुआ है आश्चर्यवत्... प्रैक्टिकल होता है। अभी तुम्हारी समझ में आता है कहाँ 5000 वर्ष की बात, कहाँ शास्त्रों में लाखों वर्ष लगा दिया है। इसको घोर अंधियारा कहा जाता है। शास्त्रों में कितने गपोड़े (डाल) दिए हैं। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग है ही दुर्गति मार्ग। भक्त लोग समझते हैं भगवान आकर कोई ना कोई (रूप) में मिलेंगे। शास्त्रों में तो बहुत दंत–कथाएँ हैं। यहाँ तुम बच्चों को कोई तकलीफ नहीं देते। यहाँ आते हो ..... बाबा रिफ्रेश करते हैं। 7–8 रोज़ भट्ठी के यहाँ अच्छे हैं और ना कोई मित्र–संबंधी हैं, ना धंधा–धोरी यहाँ है। सारा दिन फुर्सत रहती है। किचन में भी बड़ी शान्त रहनी चाहिए। शिवबाबा की याद में। जैसे श्रीनाथ द्वारे में बात बिल्कुल नहीं करते हैं। समझते हैं नहीं तो थूक पड़ जावेगी। अब वो तो पत्थर की मूर्तियाँ हैं। उनसे तुम उत्तम हो। शिवबाबा के भण्डारे से सच–2 खाने वाले हो। भोग भी लगाते हो। तुमको सदैव शिवबाबा की याद में रहना है। बात है यहाँ की। वो फिर भक्तिमार्ग में ले गए हैं। तुम तो अब ज्ञान में मस्त हो गए हो। बाप कहते हैं अहिल्याएँ, गणिकाएँ, कुब्जाएँ आदि जो हैं उनका उद्धार करता हूँ। साथ–2 साधु नाम भी दे देते हैं। उनका भी उद्धार करता हूँ। इसलिए बाप कहते हैं इन साधुओं आदि को भी छोड़ो। पतित से पावन बनाने वाला में हूँ। यह ईश्वरीय मत मिलती है जिससे चढ़ती कला होती है। आसुरी मत और ईश्वरीय मत में फर्क देखो कितना है! ड्रामा (कैसा) बना हुआ है। आसुरी मत पर चलते–2 तुम गिर पड़े हो। ईश्वरीय मत तो बहुत सहज मिलती है। मूल बात बाप कहते हैं अपन को आत्मा निश्चय करो और .... मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और ऊँच पद पावेंगे। ज्ञान किसको भी समझाना बहुत सहज है। बाकी याद में रहना इसमें मेहनत है। 84 का चक्कर तो सबकी बुद्धि में है ना। (इस) चक्कर पर समझाने की प्रैक्टिस करो। 84 जन्मों का चक्कर कैसे फिरता है, सतयुग में कितने जन्म लेते हैं, फिर त्रेता में कितने लिए, यह चक्कर फिरता ही रहता है। जैसे दौड़ी पहनते हैं ना। निशान पर हाथ लगाए फिर जो पहले आवेंगे। यह सब रेस है। कोई तो ठीक जोड़े ही गैलप करते हैं। अगर जोड़े ना होंगे तो अलग दौड़ते रहेंगे। जोड़ी होगी तो गाड़ी ठीक चलेगी। नहीं तो हंगामा होता रहेगा। फिर (दो)नों को नुकसान होता है। इसलिए पुरुषार्थ पूरा करना चाहिए। हरेक को पूरा पुरुषार्थ करना है। बाप से पूरा वर्सा लेना है। हरेक को अपने पाँव पर खड़ा होना है। हम आत्मा बाप से योग लगाय पूरा वर्सा ले लेंगे अपने लिए। हीरे जैसा जन्म हर एक को बनाना है अपने पुरुषार्थ से। साथी ना चलता है हम तो अपना बना ले; परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो क्या कर सकते हैं। यह निश्चय रखना है हम हीरे जैसा जन्म कैसे भी बनावे। निश्चय से ही विजय होती है। वो कोई भी बात की परवाह नहीं करते। ऐसे निश्चय वाले को बाप भी कहते हैं यू आर बेलकम। वो फिर औरों को भी उठाने का पुरुषार्थ करेंगे। तुम जानते हो गोवर्धन पर्वत को हम बच्चों ने उठाया है। हम बाबा की मदद से पत्थरों के पहाड़ को उठाय अर्थात् पुरानी दुनिया को पलटाय नई बना देते हैं। कितना सहज है। यह सब दृष्टांत हैं तुम्हारे। तुम जानते हो योगबल से हम विश्व की बादशाही लेते हैं। (वहाँ) तो महल आदि सब (नए) होंगे। हर चीज़ सतोप्रधान होगी। सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो होती है। फर्क तो रहता है ना। तुम पहले–2 सतोप्रधान बनते हो, बहुत सुख देखते हो फिर कम हो जाता है। धीरे–2 पुराना होता जाता है। अभी तो बहुत दुख है। मौत के लिए कितनी तैयारियाँ हो रही हैं। अंधे की औलाद अंधे कुछ समझते नहीं। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ओम।